ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; SP7: 87-89

श्यामल चौधरी
हिंदी विभाग, ति0 मा0 भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।

Correspondence
श्यामल चौधरी
हिंदी विभाग, ति0 मा0 भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर।

(Special Issue-7)
"International Conference on Science and Education: Problems, Solutions and Perspectives"
(3rd June, 2019)

इलारानी सिंह का बंगला साहित्य के विकास में अवदान

श्यामल चौधरी

प्रस्तावना

बंगला साहित्य के विकास में अनेकानेक लेखकों ने अपनी–अपनी रचना से योगदान दिये है जिसमे इलारानी सिंह का भी योगदान अविश्मरणीय है। इलारानी सिंह का जन्म 1 जुलाई 1945 को सहरसा जिला का सोनवर्षा प्रखंड में सहमौर गाँव में हुआ था। इनके पिता प्रबोध नारायण सिंह एवं माता विंदा देवी थीं। अक्टूबर 1947 में माता का निधन के बाद उनका पालन–पोषण दादी ने किया। कवयित्री इलारानी सिंह ने अपनी माता के आकस्मिक निधन की चर्चा अपनी एक हिंदी कविता 'आत्मा का अमरत्व' में किया है–

"मैंने देखा–

लावण्यमयी सुदर्शना अपनी माँ को
जो अपनी अल्हड़ जवानी में ही
गर्भस्थ शिशु की अकाल मृत्यु
और उसकी विषाक्तता से झुलसकर खाक हो गयी थी।"[1]

इलारानी सिंह के शैशवकाल के संदर्भ में कहीं लिखित प्रमाण नहीं मिलते हैं। प्रो. सुशील कुमार धर ने इलारानी के शैशवकाल के संबंध में उनके मरणोपरांत लिखा है– "वह नन्हीं सी' गोरी–गोरी गुड़िया–सी, दुबली–पतली लड़की जिसे उसके मामा लोग दो उंगलियों पर नचा–नचाकर उसके दुर्बल होने का एहसास दिलाते हुए चिढ़ाते थे और वह 'ऊँ–हूँ–हूँ' करती हुई भाग कर मामा की गोद में आश्रय लेकर अपने निर्बल हाथों से मामा के गालों पर अनाप–शनाप थप्पड़ और घूसे मारती और फिर हँसती हुई मामा के गालों को ही चूमने लगती।"[2] इसी से इलारानी के शैशव का परिचय मिलता है।

इलारानी सिंह की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा ग्रामीण परिवेश से प्रारंभ होकर महानगरीय परिवेश में परिणति पर पहुँची। उन्होंने एडमिशन परीक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से 1959, आई.ए. कलकत्ता विश्वविद्यालय से 1962, बी.ए. हिन्दी प्रतिष्ठा, भागलपुर विश्वविद्यालय से 1964 और एम.ए., सागर विश्वविद्यालय से 1966 में पास किया। यह उनकी मातृभाषानुराग का ही प्रमाण है कि उन्होंने पुनः बिहार विश्वविद्यालय से मैथिली में एम. ए. 1967 में किया।

प्रो. राजश्री शुक्ला प्रो. इलारानी सिंह के सूरजमल जालान गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता में बी.ए. आनर्स की छात्रा थी। प्रो. शुक्ला इलारानी के सफल अध्यापन के विषय में उल्लेख करती हई कहती हैं– "जालान गर्ल्स कॉलेज में जब मैं बी. ए. ऑनर्स की पढ़ाई कर रही थी, तो वे हमें भाषा–विज्ञान पढ़ाने आई थीं। उनकी अनेक ऊँची डिग्रियों एवं प्रखर पांडित्य के विषय में सुन–सुनकर हम छात्राएँ कुछ आतंकित सी थीं, परंतु उन्हें देखकर, जानकर हमें एक सुखद आश्चर्य हुआ। उनकी सरलता, सौजन्य तथा अपनेपन ने जल्दी ही उन्हें लोकप्रिय बना दिया। उनके इसी अपनत्व ने मुझ जैसी संकोची छात्रा को भी अपने वश में कर लिया था। मन के भीतर तक की थाह ले लेने वाली उनकी तलस्पर्शिनी दृष्टि के सम्मुख मन की परतें स्वतः ही खुलती जाती थीं। हम अपनी जटिल समस्यायें लेकर उनके पास जाते और वे अपने त्वरित, बुद्धि, पैनी दृष्टि और सहज मुस्कान से उसका शीघ्र ही समाधान कर देतीं. . . ।"[3]

प्रोफेसर इलारानी सिंह का विवाह प्रोफेसर प्रेम शंकर सिंह, मैथिली विभागाध्यक्ष, टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर के साथ 18 जून, 1967 में हुआ था। उस समय इलारानी सूरजमल जालान गर्ल्स कॉलेज, कलकत्ता में हिन्दी की प्राध्यापिका थीं। उनका दाम्पत्य जीवन सिर्फ 14–15 वर्षों तक चला। उसके बाद उनका परिणय –सूत्र खंडित हो गया। उनके खंडित दाम्पत्य से दुखी हो डॉ. सुकीर्ति गुप्ता का कहना है – "इला ने सागर तट पर बालू के घरौंदे बनाये, पर उसकी मुट्ठी से सिकता कण भरभड़ा कर बह जाते। अदम्य साहस था– परिवार की मर्यादा के लिए बलिदान पर उसकी कशक अंतर्मन में थी। विवाह भी तो सफल नहीं हुआ। लम्बे समय तक पत्नी, माँ और अपनी अस्मिता को संतुलित और मर्यादित रूप देने की चेष्टा की, पर असफल ही रही। अपनी अस्मिता के अपमान को इला नकार नहीं पायी और पत्नी का बंधन त्याग सिर्फ माँ के रूप में अपनी तीन बच्चों को साथ लेकर शेष जीवन–यात्रा तय करने के लिए महानगर चली गयी।"[4]

संतान के भविष्य के प्रति वह सचेष्टा रही थी। उनकी एक कविता में यह भाव स्पष्ट दिखता है –

"बेटी की अनदेखी होम वर्क की डायरी
छोटे की फरमाइशों की लिस्ट,
बड़े को अधलिखी चिट्ठी,
माँ की देर से पहुँचने की नाराजगी।"[5]

इलारानी की ख्याति से अभिभूत उनके एक अत्यंत निकट के संबंधी ने यह कहते हुए उनकी प्रशंसा की है– "इला जी ने एक कुशल प्राध्यापिका के रूप में भागलपुर एवं कलकत्ता विश्वविद्यालयान्तर्गत ख्याति अर्जित की थीं। अपने सहज एवं मृदुल स्वभाव के कारण वे छात्र–छात्राओं में अत्यधिक चर्चित थीं।"[6]

प्रो. इलारानी अपने व्यक्तित्व की गरिमा को कभी खण्डित नहीं होने दिया। इस बात को स्पष्ट करते हुए श्री राम आह्लाद चौधरी ने कहा है– "दीदी प्राध्यापाकी दुनिया के छल–प्रपंच, भेद–भाव, ईर्ष्या–द्वेष से दूर रहकर, शिष्यों के बीच अकूत प्यार बाँटने में लगीं थीं। शायद ही कोई उनका ऐसा 'भदेड़न–खदेड़न' शिष्य हो जिस पर उनके व्यक्तित्व की छाप न पड़ी हो। वस्तुतः वे भारतीय गुरू परंपरा में आलोक स्तंभ थीं। वे लोकप्रिय और निष्ठावान प्राध्यापिका थीं और उनकी वैचारिक प्रतिबद्धता, जन–सम्बद्धता तथा उनके अधूरे कार्य हमारे लिए चुनौती हैं। सच तो यह है कि आचार–विचार में दीदी जितनी सरल और निश्छल थीं, उतनी ही वैचारिक जमीन पर प्रतिबद्ध ।"[7]

वे हमेशा चाहती थीं कि विद्यार्थी पढ़ाई को पूरी गंभीरता से लें, किताबों की दुनिया के बाहर भी हस्तक्षेप करें। इसके लिए प्रेरणा देती थीं। क्लास में अनुशासन पसन्द करती थीं लेकिन विद्यार्थियों की छोटी–सी–छोटी समस्याओं को गंभीरता से सुनतीं और यथासंभव उन्हें पूरा करने का प्रयास करतीं। उनकी डॉट और फटकार में स्नेह भरा रहता था और छात्रों के उत्कर्ष की कामना छिपी रहती थीं।

इलारानी सिंह, मैथिली विभाग, तेज नारायण बनैली महाविद्यालय से दिनांक 09.04.1981 को पद त्यागकर 10.04.1981 से सेठ आनन्द राम जयपुरिया कॉलेज कोलकाता में हिन्दी की प्राध्यापिका बनीं।

प्राध्यापिका इलारानी सिंह को मातृभाषा मैथिली, राष्ट्रभाषा हिन्दी और बंगला की अच्छी जानकारी थी। इसी के कारण उन्होंने बंगला से मैथिली, मैथिली से बंगला साथ ही हिन्दी से बंगला अनुवाद को आगे बढ़या। वैसे उनका हिन्दी से बंगला और मैथिली में प्रकाशित अनुवाद कार्य नगण्य है। हिन्दी से एक मात्र महान साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की नाट्य–रचना 'घुवस्वामिनी' का बंगला अनुवाद प्रकाशित है। इसेक बावजूद शंभुनाथ लिखते हैं कि हिन्दी और बंगला के बीच वह एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक सेतु थीं। यह सत्य है कि प्रसाद को बंगला में ले जाने का पहला सफल प्रयास उन्हीं का था। उदाहराणार्थ, एकाध अनुवाद द्रष्टव्य है –

"मन्दाकिनी (चारदिक देखे) भयानक समोस्या। मूर्याारा स्वार्थेर जन्यो साम्राज्येर गौरव के निश्चिन्य कराई ठीक कोरे फेले छे। सोत्यि– वीरत्व जखोन ना थाके तखोन तार पदोचिह्न थेके राजनीतिर छलाकलार धूलि ओड़े। एक टु भेबे कुमार चन्द्रगुप्तेर एसब खबर शीघ्रई पावया दरकार। बोबार अभिनये महादेबीर ह्रदयेर आचरण किछु टा उन्मोचित होये छे– किन्तु ऐ कणामात्र स्निग्धभाव ओ कुभारेर पोक्खे कम मूल्यवान नय। कुमारचन्द्रगुप्त! कतो त्याग भावापन्य से। आर तराई बड़ भाई, रामगुप्त? कपोटाचारी रामगुप्तो! ईच्छे करे एई कदर्य पोरिवेश थेकें दूरे विस्मृतिर कोले कोथाउ निजेके लुकिये फेलि। किन्तु मन्दा! विधाता तोके केनो सृष्टि कोरल ? (भारते थाके) ना, ह्रदय के कठोर कोरे निजेर कर्त्तव्य सम्पादनेर जन्यो आमाके एखाने थाकते हवे। न्यायेर दुर्वलेर पक्ष ग्रहण कोरते हबे।"[8]

"मन्दाकिनी– (चारों ओर देखकर) भयानक समस्या है। मूर्यों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है। सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छल–छन्द की उड़ती है। (कुछ सोचकर) कुमार चन्द्रगुप्त को यह सब समाचार शीघ्र ही मिलना चाहिए। गूँगी के अभिनय में महादेवी के ह्रदय का आवरण तनिक–सा हटा है, किन्तु थोडा–सा स्निग्ध भाव भी कुमार के लिए कम महत्व नहीं रखता। कुमार चन्द्रगुप्त! कितना समर्पण का भाव है उसमें ? और उसका बड़ा भाई रामगुप्त! कपटाचारी रामगुप्त! जी करता है इस कलुषित वातावरण से कहीं दूर, विस्मृति में अपने को छिपा लूँ। पर मन्दा! तुझे विधाता ने क्यों बनाया? (सोचने लगती है) नहीं। मुझे ह्रदय कठोर करके अपना कर्त्तव्य करने के लिए यहाँ रूकना होगा। न्याय का दुर्बल पक्ष ग्रहण करना होगा।"[9]

द्रष्टव्य है एक और उदाहरण –

"जौबन तोर चंचल छाया तले
निःशेष कोरि रखेर पाय छले
जे– रस तुई एनेच्छिस मन भुले।।
भोर पेयालार नेशा–नील तुई भोदिश
प्राण–बाँशरीर रन्धेर सूर अधीस
पलके थामिस दूरेर पथिक अघस।"[10]

"यौवन! तेरी चंचल छाया।
इसमें बैठ घूट भर पी लूँ जो रस तू है लाया।
मेरे प्याले में मद बनकर कब तू छली समाया।
जीवन–वंशी के छिद्रों में स्वर बन कर लहराया।
पल भर रूकने वाले! कह तू पथिक! कहाँ से आया?"[11]

इलारानी का दूसरा बंगला अनुवाद है– हिन्दी एवं मैथिली के प्रसिद्ध लेखक राजकमल चौधरी की मैथिली कथा 'साँझक गाछ' जिसका बंगला में शीर्षक है– 'साँझेर गाछ'। उदाहरण के रूप में बंगला अनुवाद द्रष्टव्य है –

"अन्धकारे आमि भगोवती स्थानेर चारदिके आकुल हये घुरे बड़ाई। अन्धकार आमि खूँजे बेराई– एकतू खामि आलो। कोथाओ जाबार अन्नो जे कोनो एक टा पथ, कोनो अर्थो, कोनो संगति – किन्तु ना प्रेत, ना भगोवती। केऊ अमाके आलोक पथ देखाच्छे ना एई अन्धकारे।"[12]

पुनः इसे मौलिक मैथिली की पंक्तियाँ देख सकते हैं –

"अन्हारमे हम भगवती–स्थानक चारू कात औनाइत फिरैत छी । अन्हारमे हम तकैत छी, इजोतक कोनो पिण्ड, कतहु जयबाक हेतु कोनो एक टा मार्ग, कोनो अर्थ, कोनो संगति....किन्तु, ने प्रेत आ ने भगवती– क्यो हमरा इजोतक रस्ता नहि देखबैत अछि, एहि अन्हारमे।"[13]

पुनः एक और उदाहरण द्रष्टव्य है –

"जीवोन टा एक टा विराट् चुल्ली जेखाने आमि सर्वोदा अबुझ काचा चेलार मतो धीकि–धीकि जोल छी। आगुन जालाते सबचेये वेशी साहाज्जो कोरे अतीत– पूरनो दिनेर सृति।"[14]

द्रष्टव्य है मूल मैथिली–
"जिनगी एक टा विराट चुल्हि अछि जाहिमे हम सदिखन हरियर काँच जारन जकाँ जरैत–सुनगैत रहैत छी। आगि पजारबामे सभसँ बेसी सहायक होइत अछि अतीत। बीतल दिनक स्मृति।"[15]
इलारानी सिंह ने अपनी एक कविता 'शिशु कलकत्ता का' बंगला अनुवाद किया है, द्रष्टव्य है –

"कोलकाता एक शिशु
कोलकाता एक शिशु
सस्नेह उमा जेनो टांगियेछे तार ऊपरे
लाल मशारि
आर खेलवार जन्य दियेछे
भालूकेर चेहारार एक खेलना–हरताल
चड़बार जन्य एनेछे मिछिलेर साईकल
आर बाच्चार कान्ना शान्तो करते दियेछे
स्लोगान गाउया धाई
बेशि झामेला करले जे
अज्ञानता आर अनुरंजित आफि देय
शिशु के राखे घूम पाड़िये।"[16]
मैथिली कविता –

"शिशु कलकत्ता
शिशु कलकत्ता पर
स्नेहसँ उषा टाँगि देलक
लाल मशहरी
और खेलबा लेल देलक
भालू–नूमा हड़ताल खेलौना,
चढ़बा क लेल देलक
जुलूस–सायकिल
और
और कानला पर फुसलैबा लेल देलक
नारा–नौरी
जे अधिक तंग कैला पर –
मूर्खता और आवेशक अफीम
खुआ शिशु कैं सुता दैत अछि।"[17]
मरणोपरान्त उनपर लिखे गये संस्मरणों से यह पता चलता है कि उनका आगे का पड़ाव हिन्दी से बंगला अनुवाद का था। विजय लक्ष्मी इलारानी को कैंसर से पीड़ित अवस्था में देखने गई थीं। बात ही बात में इलारानी ने कहा– "उफ, मुझे कई अधूरे काम पूरे करने हैं। 'बलचनमा' का अनुवाद भी पूरा करना है। कई महीनों से इला जी अस्वस्थ थीं। मैंने उनको ऐसी हालत में भी नागार्जुन के उपन्यास 'बलचनमा' का बंगला में अनुवाद करते देखा।"[18]
इलारानी का बंगला में एक आलेख 'मैथिली गल्प साहित्येर साम्प्रतिक धारा' 1985 ई. में प्रकाशित हुआ था। इस आलेख में उन्होंने मैथिली गल्प साहित्य की पृष्ठभूमि पर फोकस किया है। इसमें मैथिली के प्रसिद्ध कथाकारों के नाम एवं उनकी कथाओं का वर्णन है और तत्कालीन कथाओं की प्रवृत्ति का भी। उन्होंने इन कथाकारों में ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' जयधारी सिंह, हरिमोहन झा, ललित मायानन्द, राजकमल, सोमदेव, जीवकान्त, हंसराज, गौरी मिश्र, शेफालिका वर्मा एवं अपनी कथा 'कुपुरूषक खोज' तक के नामों का उल्लेख किया है। यह एक अत्यन्त लघु लेख है। इसमें कहीं–कहीं कथा की प्रवृत्ति एवं विषयवस्तु की भी चर्चा है।
अनुसंधान के क्रम में मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि राजकमल चौधरी की कथा 'साँझक गाछ' का प्रभाव इलारानी की एक मैथिली कविता– 'साँझ – एक मनःस्थिति' पर पड़ा है। मुझे ऐसा लगता है कि इलारानी ने बंगला अनुवाद करने में एक ही सिद्धांत को अपनाया है – भाषा–रूपान्तरण। इसके पीछे एक कारण है, जैसा मुझे लगता है कि उनको संस्कृत का गहन अध्ययन नहीं था।

संदर्भ सूची
1 वात्या, पृष्ठ संख्या – 24
2 स्मरण को पाथेय बनने दो, पृष्ठ संख्या – 10
3 उपरोक्त, पृष्ठ संख्या –14
4 जनसत्ता, 14 जनवरी 1996, पृष्ठ संख्या – 26
5 फूटते हैं अँकुर, पृष्ठ संख्या – 41
6 स्मारिका, चेतना समिति, पटना, 1995, पृष्ठ संख्या –25
7 स्मरण को पाथेय बनने दो, पृष्ठ संख्या – 13
8 स्मरण को पाथेय बनने दो– विभा दास, पृष्ठ संख्या– 7
9 ध्रुवस्वामिनी– इलारानी, पृष्ठ संख्या– 7
10 उपरोक्त, पृष्ठ संख्या– 21
11 ध्रुवस्वामिनी– जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ संख्या– 34
12 कोरक बुक, फेयर इसू, कोलकाता, पृष्ठ संख्या– 42
13 कथा संग्रह, पृष्ठ संख्या– 104
14 कोरक बुक, फेयर इसू, कोलकाता, पृष्ठ संख्या– 43
15 कथा संग्रह, पृष्ठ संख्या– 105
16 देश– बंगला पत्रिका, पृष्ठ संख्या– 39
17 शिशु कलकता, विंदंती, पृष्ठ संख्या– 33
18 स्मरण को पाथेय बनने दो– विभा दास, पृष्ठ संख्या– 9।